SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 10

सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 5

मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

भाग - 1

Pritesh Joshi

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मुद्रण चीन, जापान, कोरिया

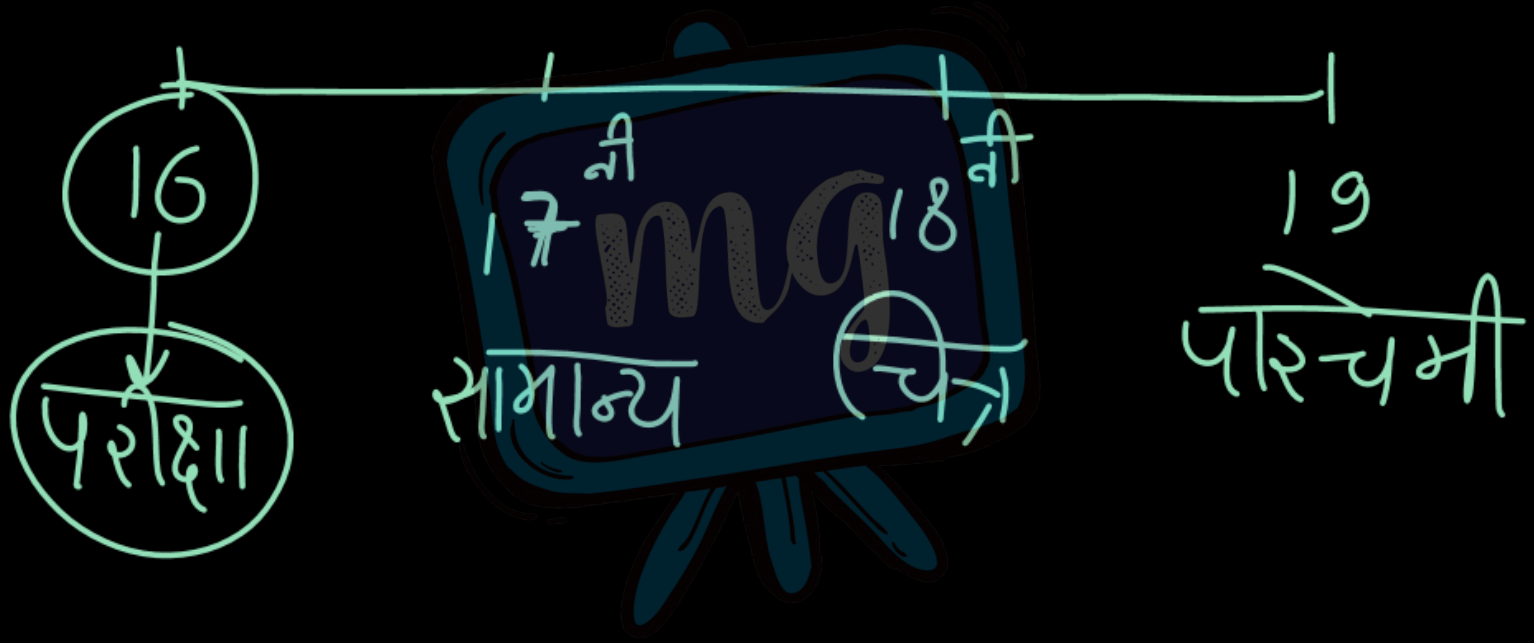

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

शुरूआती छपी किताबें

- मुद्रण की सबसे पहली तकनीक चीन, जापान और कोरिया में विकसित हुई।
- यह छपाई हाथ से होती थी।
- तक़रीबन 594 ई. से चीन में काठ के ब्लॉक या तख़्ती पर स्याही लगाकर कागज़ को उस पर रगड़कर किताबें छापी जाने लगी थीं।
- चूँकि पतले, छिद्रित काग़ज़ के दोनों तरफ़ छपाई संभव नहीं थी।
- इसलिए पारंपरिक चीनी किताब 'एकॉर्डियन' शैली में, किनारों को मोड़ने के बाद सिल कर बनाई जाती थी।

- किताबों का सुलेखन करनेवाले लोग दक्ष सुलेखक या खुशख़त होते थे।
- ये हाथ से बड़े सुंदर-सुडौल अक्षरों में सही-सही कलात्मक लिखाई करते थे।

चीन में 16वीं शताब्दी तक :-

- एक लंबे अरसे तक मुद्रित सामग्री का सबसे बड़ा उत्पादक चीनी राजतंत्र था।
- सिविल सेवा परीक्षा से नियुक्त चीन की नौकरशाही भी विशालकाय थी।
- चीनी राजतंत्र इन परीक्षाओं के लिए बड़ी तादाद में किताबें छपवाता था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पढाई

- 16वीं सदी में परीक्षा देने वालों की तादाद बढ़ी, लिहाजा, छपी किताबों की मात्रा भी उसी अनुपात में बढ़ गई।

17वीं सदी में चीन में :-

- 17वीं सदी तक आते-आते चीन में शहरी संस्कृति के फलने-फूलने से छपाई के इस्तेमाल में भी विविधता आई।
- अब मुद्रित सामग्री के उपभोक्ता सिर्फ़ विद्वान और अधिकारी नहीं रहे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- व्यापारी अपने ग्राहकों के कारोबार की जानकारी लेने के लिए मुद्रित सामग्री का इस्तेमाल करने लगे।
- पढ़ना एक शग़ल भी बन गया।
- नए पाठक वर्ग को काल्पनिक क़िस्से, कविताएँ, आत्मकथाएँ, रूमानी नाटक तथा शास्त्रीय एवं साहित्यिक कृतियों के संकलन पसंद थे।
- अमीर महिलाओं ने भी पढ़ना शुरू किया और कुछ ने स्वरचित काव्य और नाटक भी छापे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q चीन मे मुद्रण संस्कृति किस प्रकार शुरू हुआ?

- पढ़ने की यह नयी संस्कृति एक नयी तकनीक के साथ आई।
- 19वीं सदी के अंत में पश्चिमी शक्तियों द्वारा अपनी चौकियाँ स्थापित करने के साथ ही पश्चिमी मुद्रण तकनीक और मशीनी प्रेस का आयात भी हुआ।
- पश्चिमी शैली के स्कूलों की ज़रूरतों को पूरा करने वाला शंघाई प्रिंट-संस्कृति का नया केंद्र बन गया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- हाथ की छपाई की जगह अब धीरे-धीरे मशीनी या यांत्रिक छपाई ने ले ली।

जापान में मुद्रण :-

- चीनी बौद्ध प्रचारक 768-770 ई. के आसपास छपाई की तकनीक लेकर जापान आए।
- जापान की सबसे पुरानी छपी, पुस्तक 'डायमंडसूत्र' है, जो 868 ई. में छपी।
- इसमें पाठ के साथ-साथ काठ पर खुदे चित्र हैं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

डायमंड सूत्र का एक पन्ना


菩薩受記作佛而我等不預斯事甚自感傷
失於如來無量知見世尊我常獨處山林樹
下若坐若行每作是念我等同入法性云何
如來以小乘法而見濟度是我等咎非世尊
也所以者何若我等待說所因成就阿耨多
羅三藐三菩提者及以大乘而得度脫然我
等不解方便隨宜所說初聞佛法遇便信受
恐惟取證世尊我從昔來終日竟夜每自剋

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- तसवीरें अकसर कपड़ों, ताश के पत्तों और काग़ज़ के नोटों पर बनाई जाती थीं।
- मध्यकालीन जापान में कवि भी छपते थे और गद्यकार भी, तथा किताबें सस्ती और सुलभ थीं।
- 18वीं सदी के अंत में, एदो (वर्तमान में तोक्यो) के शहरी इलाक़े की चित्रकारी में शालीन शहरी संस्कृति का पता मिलता है।
- तोक्यो की इस चित्रकारी में हम चायघर के मजमों, कलाकारों, और तवायफ़ों को देख सकते हैं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- हाथ से मुद्रित तरह-तरह की सामग्री – महिलाओं, संगीत के साज़ों, हिसाब-किताब, चाय अनुष्ठान, फूलसाज़ी, शिष्टाचार और रसोई पर लिखी किताबों – से पुस्तकालय एवं दुकानें अटी पड़ी थीं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

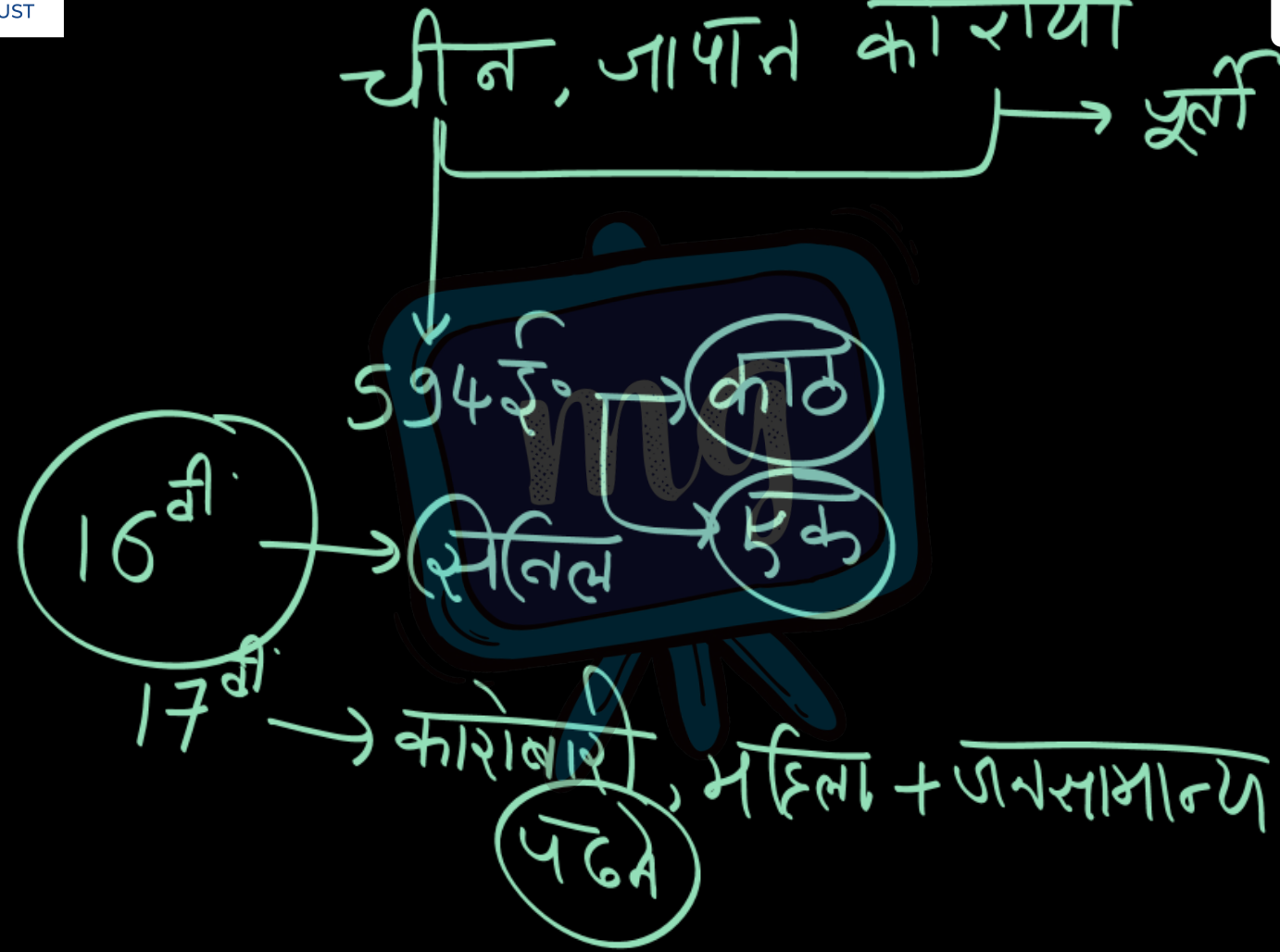

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

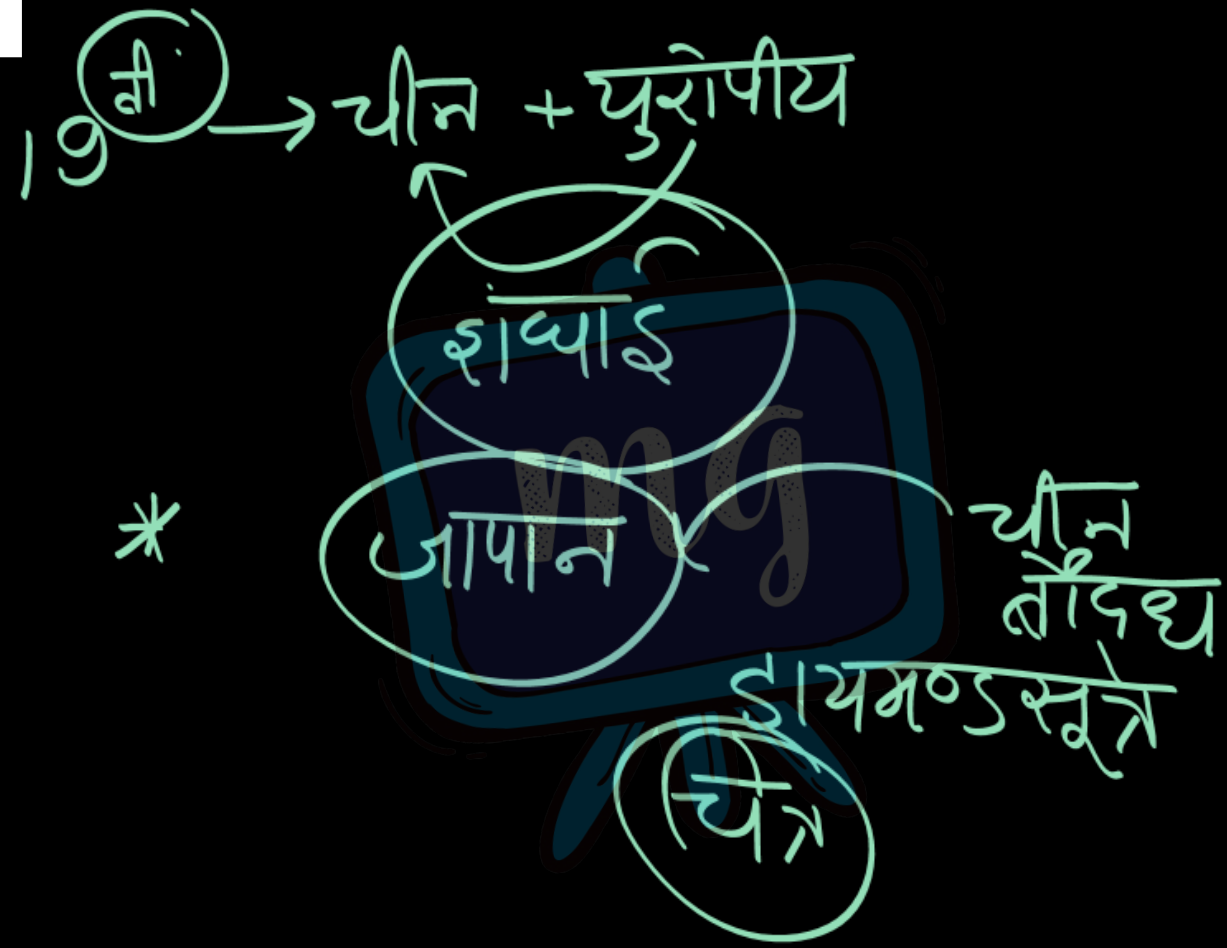

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सुबह का नजारा



रचयिता : शून्मन कुबों, 18वीं सदी के अंत में

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

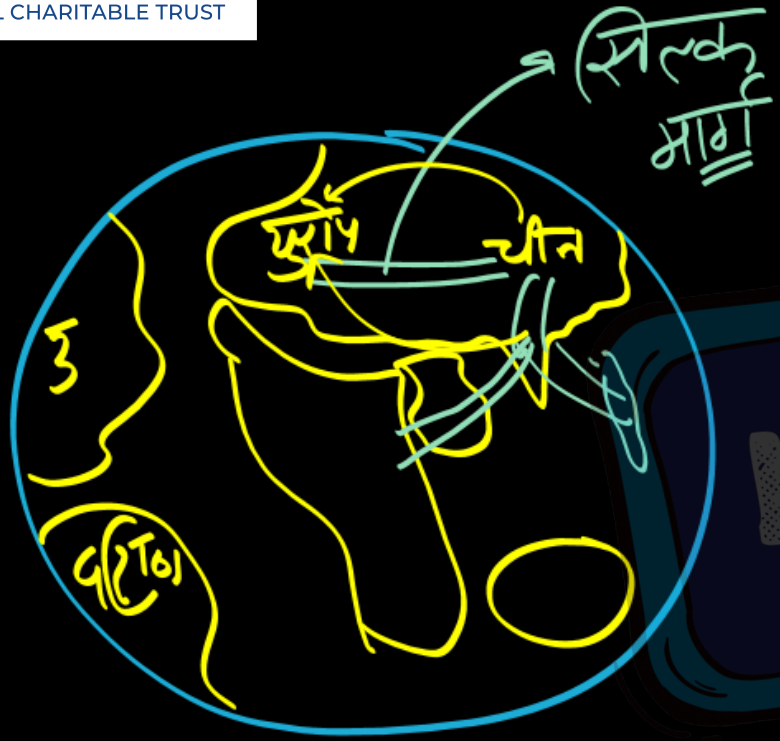

यूरोप में मुद्रण का आना

- सदियों तक चीन से रेशम और मसाले रेशम मार्ग से यूरोप आते रहे थे।
- 11वीं सदी में चीनी काग़ज़ भी उसी रास्ते वहाँ पहुँचा।
- कागज ने कातिबों या मुंशियों द्वारा सावधानीपूर्वक लिखी गई पांडुलिपियों के उत्पादन को मुमकिन बनाया।
- 1295 ई. में मार्को पोलो नामक महान खोजी यात्री चीन में काफ़ी साल तक खोज करने के बाद इटली वापस लौटा।

- चीन के पास वुडब्लॉक (काठ की तख़्ती) वाली छपाई की तकनीक पहले से मौजूद थी।
- मार्को पोलो यह ज्ञान अपने साथ लेकर लौटा।
- फिर तो इतालवी भी तख़्ती की छपाई से किताबें निकालने लगे और जल्द ही यह तकनीक बाक़ी यूरोप में फैल गई।
- इन मुद्रित किताबों को कुलीन वर्ग तथा भिक्षु-संघ सस्ती व अश्लील मानते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इनके लिए छपने वाली किताबों के विलासी संस्करण अभी भी वेलम पर ही छपते थे।
- वेलम (Vellum) : चर्म-पत्र या जानवरों के चमड़े से बनी लेखन की सतह।
- व्यापारी और विश्वविद्यालय के विद्यार्थी सस्ती मुद्रित किताबें ख़रीदते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

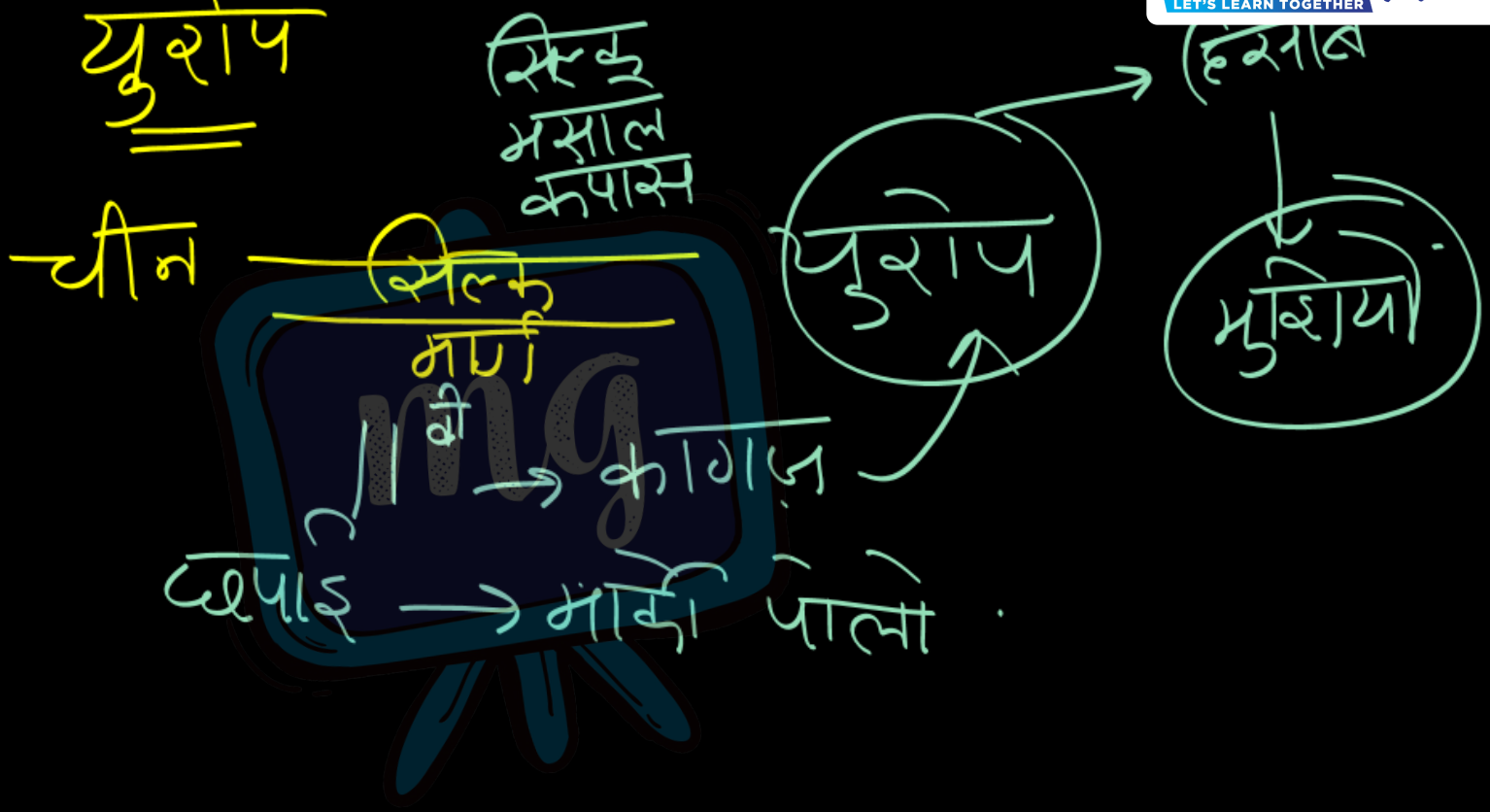

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

किताबों की बढ़ती माँग

- किताबों की माँग बढ़ने के साथ-साथ यूरोप के पुस्तक-विक्रेता विभिन्न देशों में निर्यात करने लगे।
- अलग-अलग जगहों पर पुस्तक मेले लगने लगे।
- बढ़ती माँग की आपूर्ति के लिए हस्तलिखित पांडुलिपियों के उत्पादन के भी नए तरीक़े सोचे गए।
- अब सिर्फ अमीर लोगों के यहाँ सुलेखक या कातिब नहीं पाए जाते थे, बल्कि पुस्तक-विक्रेता भी अब उन्हें रोज़गार देने लगे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- आम तौर पर एक विक्रेता के यहाँ 50 कातिब काम करते थे।
- लेकिन किताबों की अबाध बढ़ती माँग हस्तलिखित पांडुलिपियों से पूरी नहीं होने वाली थी।
- नक़ल उतारना बेहद ख़र्चीला, समयसाध्य और श्रमसाध्य काम था।
- पांडुलिपियाँ अकसर नाज़ुक होती थीं, उनके लाने-ले जाने, रख-रखाव में तमाम मुश्किलें थीं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इसलिए उनका सर्कुलेशन–(चलन) सीमित रहा तो किताबों की बढ़ती माँग के चलते वुडब्लॉक प्रिंटिंग उत्तरोत्तर लोकप्रिय होता गया।
- 15वीं सदी की शुरुआत तक यूरोप में बड़े पैमाने पर तख़्ती की छपाई का इस्तेमाल करके कपड़े, ताश के पत्ते, और छोटी-छोटी टिप्पणियों के साथ धार्मिक चित्र छापे जा रहे थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

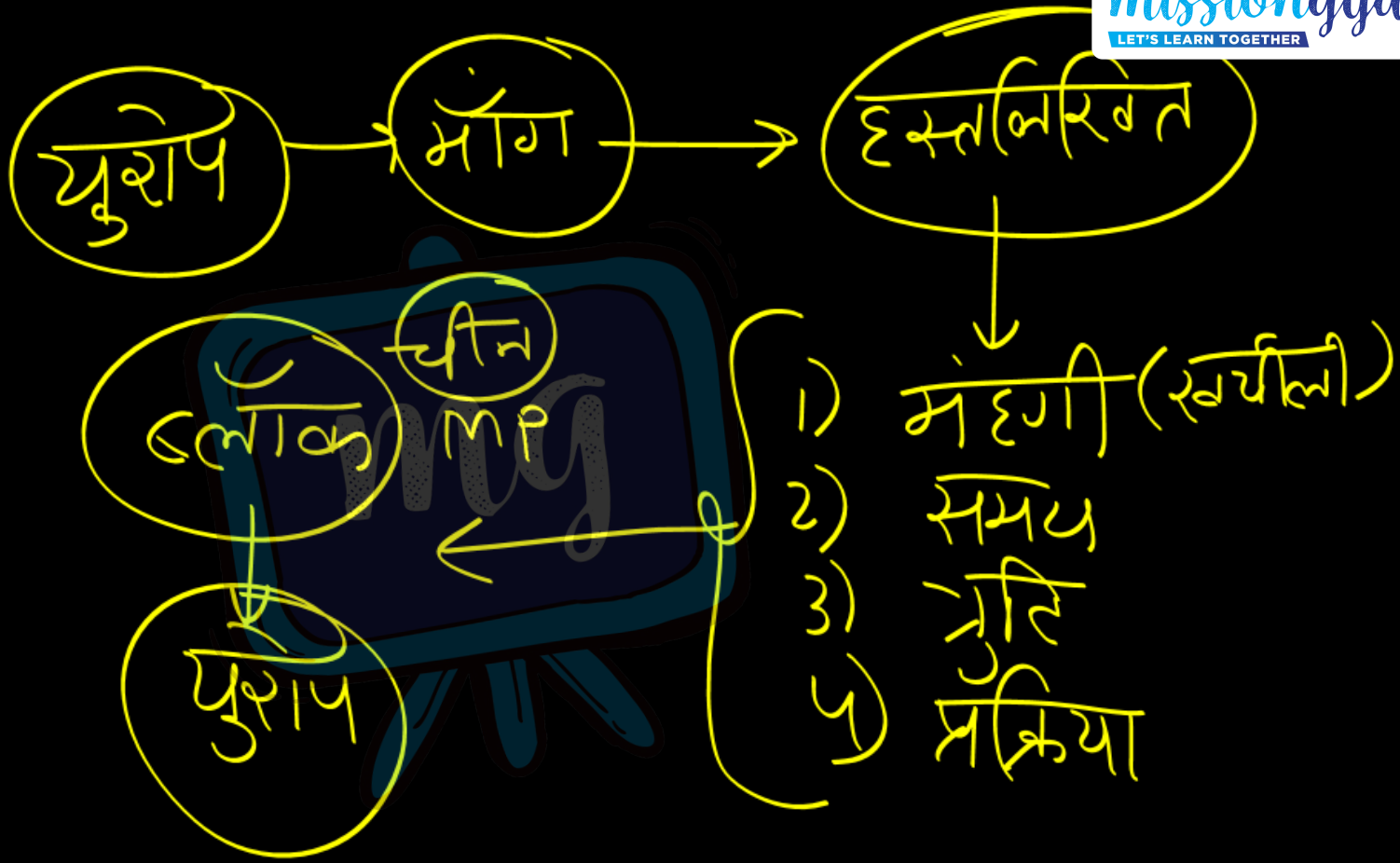

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कोरिया की जिक्जी



- कोरिया की जिक्जी (JIKJI) मूवेबल मेटल टाइप (Movable metal type) के साथ मुद्रित दुनिया की सबसे पुरानी मौजूदा पुस्तकों में से है।
- इसमें ज़ेन (Zen) बौद्ध धर्म की मुख्य विशेषताएँ हैं।

- इस पुस्तक में भारत, चीन और कोरिया के लगभग 150 बौद्ध भिक्षुओं का उल्लेख किया गया है।
- इसे 14वीं शताब्दी के अंत में मुद्रित किया गया था।
- पुस्तक का पहला खंड उपलब्ध नहीं है, तथा दूसरा खंड फ्रांस की नेशनल लाइब्रेरी में उपलब्ध है।
- यह कार्य मुद्रण संस्कृति में एक महत्वपूर्ण तकनीकी परिवर्तन साबित हुआ।
- यही कारण है कि इसे 2001 में यूनेस्को मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर में अंकित किया गया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. चीन और जापान में मुद्रण संस्कृति कैसे शुरू हुई?

Q. यूरोप में मुद्रण संस्कृति की शुरुआत को आप कैसे देखते हैं?

Q. यूरोप के उस व्यक्ति का नाम लिखें जिसने छपाई की तकनीक को यूरोप में शुरू किया?